शाश्वत् है, अर्थात् जीव श्रीभगवान् के तुल्य कभी नहीं हो सकता। आत्मा का पृथक् शाश्वत् स्वरूप है, इस सत्य को असंदिग्ध रूप से स्थापित करने के लिए वेद में इस सिद्धांत की नाना रूपों में पुनरुक्ति की गयी है। किसी-किसी तत्त्व के निर्दोष और पूर्ण ज्ञान के लिए यह आवश्यक होता है कि उसकी पुनरावृत्ति की जाय।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि।।२६।।

अथ च=और यदि; **एनम्**=इस आत्मा को; **नित्यजातम्**=नित्य जन्मने वाला; **नित्यम्**=सदा; **वा**=अथवा; **मन्यसे**=मानता है; **मृतम्**=मरने वाला; **तथापि**=ऐसा होने पर भी; **त्वम्**=तू; **महाबाहो**=हे महाबाहु; **न**=नहीं; **एवम्**=इस प्रकार से; **शोचितुम्**=शोक करने के; **अर्हसि**=योग्य है।

अनुवाद

यदि तू इस आत्मा को नित्य जन्मने और नित्य मरने वाला भी माने, तो भी हे महाबाहु! तेरे लिए शोक का कोई कारण नहीं है।।२६।।

तात्पर्य

मानव समाज में दार्शनिकों का एक ऐसा दल सदा रहा है, जो बौद्धों के ही समान यह नहीं मानता कि देह से परे आत्मा का कोई पृथक् स्वरूप भी है। प्रतीत होता है कि जिस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता का प्रवचन किया, उस समय भी इस कोटि के दार्शनिक विद्यमान थे। उन्हें 'लोकायतिक' और 'वैभाषिक' कहा जाता था। इन दार्शनिकों के मत में प्राकृत तत्त्वों के सम्मिश्रण की एक विशेष परिपक्व अवस्था में जीवन-लक्षण (चेतना) अथवा आत्मा की उत्पत्ति होती है। आधुनिक वैज्ञानिक एवं दार्शनिकों की भी प्रायः यही विचारधारा है। उनके अनुसार, शरीर की रचना केवल स्थूल तत्त्वों से हुई है तथा एक विशेष अवस्था में स्थूल तथा रासायनिक तत्त्वों की अन्तः क्रिया से जीवन-लक्षण प्रकट होते हैं। मानवीय संरचना-विज्ञान इसी मत पर आधारित है। आजकल पाश्चात्य जगत् में लोकप्रिय हो रहे अनेक प्रकार के कपट-धर्म भी इस मत का और शून्यवाद को मानने वाले अभक्त बौद्धों का अनुसरण कर रहे हैं।

यदि वैभाषिक मत के अनुसार अर्जुन का आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं है, तो भी शोक का कोई हेतु नहीं बनता। रसायनों की थोड़ी सी मात्रा के लिए शोक से विह्वल होकर कोई अपने कर्तव्य-कर्म का त्याग नहीं करता। आधुनिक विज्ञान तथा युद्ध में तो शत्रु-विजय के लिए रसायनों को बड़ी मात्रा में नष्ट किया जाता है। वैभाषिक दर्शन का कहना है कि शरीर का क्षय होने के साथ ही तथाकथित आत्मा भी नष्ट हो जाता है। अतएव अर्जुन वैदिक सिद्धान्त के अनुसार अणु-आत्मा के अस्तित्व को माने अथवा न माने, दोनों ही स्थितियों में उसके लिये शोक का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है। वैभाषिक मत के अनुसार प्रतिक्षण अनेक आत्माओं की जड़ प्रकृति